श्री श्री मां के स्वतःस्फूर्त संगीत

■

१

जीवेर भाग्ये अवैराग्ये परम पद मिलवे ना रे।
(ताइ) करो सार एक, वैराग्य-विवेक, परिहरि वासनारे॥[1]
वैराग्येर मात्रा कतो, बुझबि काजे होल रतो,
(ओरे) तखन देखबि अविरतो कान्न दिके तोर मन टाने रे॥
त्यजिये संकल्प कर्म, आचरो मानव धर्म,
(ओरे) नित्य निर्विकार ब्रह्म चिन्त चित्ते बारे बारे॥
बाहिर होते डाकि मन, हृदे राखा अनुक्षण,[2]
(करि) ब्रह्म भेलाय आरोहण तरह भवसागरे॥
होले अहंकार हतो, सब द्वन्द्व निवारितो।
(देखबि) स्वभाव हइबे स्थितो ज्ञेय सत्य परात्परे॥

(१३४२ सन, फाल्गुन मास। विन्ध्याचल।)

---

१. बंगला के स का उच्चारण हिन्दी श की तरह, य का उच्चारण ब की तरह और य का उच्चारण शब्द के शुरू में बैठने पर ज की तरह है जैसे—यात्री (जात्री), यार (जार), येथाय (जेथाय), किन्तु शब्द के बीच या अन्त में रहने पर इस य का उच्चारण हिन्दी के य की ही तरह होता है, जैसे—शयन), समय (शमय)।

२. बंगला में 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' की तरह है।

२

आमि कारे बा ऐखन डरि!
आमि बाहिया चलेछि तरी!
होक ना केनो तुफान भारी!
डुबबे ना हय तरी।

याँर यात्री, ताँर-इ तरी।
(आमि) ताँर भरसाइ करि।
आमि कारे बा ऐखन डरि!

(आरे) ये यात्री, सेइ तो तरी,
आबार सेइ तो तुफान भारी।

(से ये) तातेइ डोबे, तातेइ भासे,
सेइ ये भाइ काण्डारी।
आमि ताँर भरसाइ करि।

(१३४५ सन। देहरादून।)

३

ओहे जीवेर जीवन धन।
तुमि बुद्ध, तुमि शुद्ध, तुमि नित्य निरञ्जन।
तुमि मुक्त, तुमि शान्त, तुमि शिव-नारायण॥

येथाय यतो भव ज्वाला, हच्छे सेथाय माया-खेला,
(तुमि) घुचाओ एबार भाङ्गा गड़ा, ओरे आमार पागल मन।

(२५ आश्विन, १३४६ सन।)

४

गोकुल-विहारी, दयामय हरि,
वृन्दावन वनचारी।
गोवर्द्धन-धारी, हे कृष्ण मुरारी,
अधरे मुरलीधारी।
राखालिया मति, अगतिर गति,
विश्व वेदन-हारी।
हृदि पद्मासने, जागो प्रेमानने,
चित्त आलोक करि।
ओहे दयामय, प्रभात समय,
हृदि रञ्जन-कारी।
हे ब्रज-विहारी, मुकुन्द मुरारी,
जागो जागो जागो हरि।

(१३४५ सन। २७ फाल्गुन)

५

दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।

ब्रह्ममयी मा आमार ब्रह्म गोपाल.....।
ब्रह्म गोपाल आमार ब्रह्ममयी मा.....।
मा, मा मा आमार ब्रह्म गोपाल।

जय दुर्गा, दुर्गा दुर्गा।
जय दुर्गा, जय दुर्गा।

जय दुर्गा, शिव दुर्गा।
जय दुर्गा, मा दुर्गा।

दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।
दुर्गति-नाशिनी जय मा दुर्गा।
काल-विनाशिनी जय मा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा जय मा दुर्गा।
भक्ति-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
ज्ञान-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
शान्ति-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
आनन्द-दायिनी जय मा दुर्गा।
प्रेम-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा जय मा दुर्गा॥

६

गोपाल गोविन्द गोपाल गोविन्द॥ ४॥
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द॥ २॥
गोपाल गोपाल गोपाल गोपाल॥ ३॥
गोपाल गोपाल ब्रह्म गोपाल॥

ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल।
प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल॥
ब्रह्म गोपाल यशोदा-दुलाल, जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल।
यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल प्राण गोपाल प्रेम गोपाल॥
जय नन्दलाल नन्ददुलाल यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल।
ब्रह्म गोपाल यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल ब्रजेर राखाल॥

ब्रजेर राखाल जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल ब्रह्म गोपाल।
जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल॥
हा गोपाल प्राण गोपाल हा गोपाल प्राण गोपाल।
हा गोपाल.....

७

चले ना चले ना आस गो जननी
तोमा छाड़ा दिन चले ना।
तुमि ये आमार ऐक आपनार
तोमा छाड़ा दिन काटे ना।
एसो एसो मागो बोसो हृदय पद्मे[1]
दिवस रजनी आर काटे ना।
विषयेते मन परवशे गमन
तोमार दिके तो मा याइ ना।
(मागो) दाओ शुद्धा भक्ति होक अनुरक्ति
तोमा छाड़ा यैनो (किछु) चाइ ना।
स्वार्थ भरा मन चाइ धन जन
तोमाके तो मा चाइ ना।

१. (७) बंगला में किसी व्यञ्जन के साथ य, म अथवा व लगने पर प्रायः उस व्यञ्जन का दुगुना उच्चारण होता है। जैसे—मनुष्य (मनुष्य), आत्मा (आत्ता), पद्म (पद्द) आदि। किन्तु कुछ शब्दों में उस प्रकार के म का स्पष्ट उच्चारण बंगला में भी होता है। जैसे—जन्म, युग्म (जुग्म), उन्माद, ब्राह्मण आदि।

(मा) करोगो करुणा छलना करो ना
आर आमाय छेड़े थेको ना ॥[1]

८

एसो गो जननी ओगो गुणमणि
कैमने काटि मा दिवस रजनी ।
लओ गो तुलिया सदय हृदया
तुम ये आमारि एकमात्र जानि ॥
सर्वहारा मागो मन आतङ्के भरा
कोथा याबो मागो होये दिशाहारा ।
दैओगो आश्वास होक मा विश्वास
तुमि ये आमारि एकमात्र मानि ॥[2]

---

१. (७) माँ के मुख से दूसरे के द्वारा रचित संगीत का एक पद सुनकर किसी ने कहा था कि उसके साथ और भी पद संयुक्त होने से अच्छा होता। माँ भी उसी समय हँसते हुए अपने भाव में मिला-मिलाकर गाने लगीं।

२. (८) माँ के पास एक व्यक्ति है। उसके हृदय का व्याकुल भाव देखकर उसके अन्तर की बातें माँ मानो मिला-मिलाकर हँसते-खेलते गाने लगीं।

वैराग्य, ऐश्वर्य, शैशव आदि संस्कृत शब्दों के ऐ-कार का उच्चारण बंगला में शैल, बैशाख आदि की तरह ही होता है। किन्तु कुछ खास बंगला शब्दों में ए-कार का उच्चारण हिन्दी ऐ-कार सा होता है, जैसे, एक (ऐक), केमन (कैमन), देख (दैखो), गेलो (गैलो) आदि। परन्तु हिन्दी ऐ-कार के उच्चारण के अन्त में जो एक हल्की य की ध्वनि निकलती है उसे छोड़ कर केवल उसके प्रथमांश का ही उच्चारण उस प्रकार के बंगला ऐ-कार में होता है।

९

हरि बोले डाक रे ओ मन गुरु बोले डाक।
परम पद पाबे यदि चरण तले पड़े थाक ॥
पशु पाखी तारा सबे प्रहरे प्रहरे जागे।
तुमि मन लिप्त सुखे घुमेर घोरे मारछो झाँक ॥
हरि बोले डाक रे ओ मन.....
मनमोहनेर मन दुराचार
शिशुर मतो स्वभाव कइ तार।
जाने ना से आचार विचार
सेइ भावना नाइ को तार।
हरि बोले डाक रे ओ मन.....।

१०

कि दिये पूजिबो ब्रह्ममयी ?
देखि ना ब्रह्माण्डे किछु
आछे कि ना तोमा बइ।
पूजार यतो उपचार
आमि किगो दिबो आर।
तोमा बिना ए ब्रह्माण्डे
कोथाय आर आछे कइ ॥
अणु होते परमाणु
सकलि तोमारि तनु।
सर्व तत्त्वे तुमिइ आमार
तोमातेइ आमि रइ ॥

---

(९) कुछ पद माँ ने सुने थे। बाद में बात-बात में पद मिला-मिलाकर माँ ने गाया।

(१०) पूर्व श्रुत प्रथम २।१ पंक्तियाँ लेकर माँ अपने भाव में मिला-मिला कर गा रही थीं। उसी को लिया गया है।

११

आय सबे भाइ हरि बोले आनन्दे हरिगुण गाइ रे
आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) डाकिया बैड़ाइ रे
डाकिया·····बेड़ाइ रे।
हरि बोले बाहु तुले (आय) काँदिया बैड़ाइ रे
काँदिया बैड़ाइ रे (३)।

हरि बोलले दिबेन धरा ऐ ये आमार मनचोरा
(नामे) पागल करा पूर्ण करा
(ऐ) श्यामल सुन्दर भाइ रे।

आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) नाचिया बैड़ाइ रे
नाचिया बैड़ाइ रे॥

हरि हरि हरि बोले (चलो) नामे मेते याइ रे
(चलो) प्रेमे मेते याइ रे
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल भाइ रे।

आय सबे भाइ—
प्राणेर ठाकुर कोथाय आमार (चलो) खुँजिया बैड़ाई रे
खुँजिया·····बैड़ाइ रे॥

आय सबे भाइ—
हरि हरि हरि बोले नगरे बैड़ाइ रे।
आय सबे भाइ—

बने बने मनेर कोणे (आय) खुँजिया बैड़ाइ रे
(शुनि) प्राणेर ठाकुर आछेन प्राणे, ऐ राखाल राजा भाइ रे।

आय सबे भाइ—
हरि हरि हरि बोले (आय) नाचिया बैड़ाइ रे।
एसो एसो प्राणेर ठाकुर (आमरा) नामे मेते याइ हे।
मधुर मंगल नाम (आमरा) मने प्राणे गाइ हे
भुवन मंगल नाम (आमरा) मने प्राणे गाइ हे।

आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) डाकिया·····बैड़ाइ रे
काँदिया·····बैड़ाइ रे
खुँजिया·····बैड़ाइ रे
नाचिया·····बैड़ाइ रे।

आय सबे भाइ—
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल॥ ४

हरि बोल हरि बोल·····

१२

चल सखी चल देखे आसि यमुनार कूले गो।
चल सखी चल देखे आसि यमुनार तीरे।
चल सखी चल देखे आसि यमुनार घाटे।
आमार गृहे थाका·····
आमार घरे थाका होलो ये दाय गो॥

चल सखी चल·····

कदम तलाय (प्राणेर) ठाकुर
बाँशिटि बाजाय मधुर मधुर
मधुर मुरलीर सुरे प्राण करे आकुल गो ।

चल सखी चल.....

त्रिभङ्गेर बाँशरीर सुरे
ब्रजगोपीर प्राण हरे
राधाराणी रहे उचाटने गो ।

चल सखी चल.....

राधाराणी माठोयाले
(ऐ) प्रेममयी डेके बले
चल चल चल मिलि सबे घाटे गो ॥

चल सखी चल.....[1]

१३

हरेर्नामैव नामैव नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

(तोरा) ब्रजेर बालक बोल बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) कोथा होते के आनिलो बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) गोलोके गोपने छिलो बोल हरिबोल ।
(ऐ नाम) जीवेर भाग्ये उदय होलो बोल हरिबोल ॥

१. १२—काशी में कन्यापीठ की लड़कियाँ झूलन, जन्माष्टमी, नन्दोत्सव करती हैं। उस समय माँ हँसते-खेलते लड़कियों के साथ इन पदों को मिला-मिला कर गा रही थीं।

जीव उद्धारण महानाम बोल हरिबोल ।
महा उद्धारण ऐ नाम बोल हरिबोल ।
(तोरा) मायेर दैओया एइ हरिनाम बोल हरिबोल ।
(नामे) पापी तापी उद्धारिलो बोल हरिबोल ॥
(नामे) अजामिल बैकुण्ठे गैलो बोल हरिबोल ।
(नामे) जगाइ माधाइ उद्धारिलो बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(नामे) ध्रुव प्रह्लाद तरे गैलो बोल हरिबोल ।
(नामे) ध्रुव ध्रुव-लोके गैलो बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) नारद जपेन वीणा-यन्त्रे बोल हरिबोल ।
(ऐ नाम) ब्रह्मा जपेन चतुर्मुखे बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) पार्वती लन महासुखे बोल हरिबोल ।
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(ऐमन) आर हबे ना मानव जनम बोल हरिबोल ।
(ऐ नाम) यतोइ बलो ततोइ भालो बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) जिह्वाय आपन वश थाकिते बोल हरिबोल ।
(तोर) कण्ठागत प्राण थाकिते बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(नामे) ये दिन गैलो से दिन भालो बोल हरिबोल ।
(ओरे) नाम नामीते नाइ रे प्रभेद बोल हरिबोल ॥
(ओ मन) श्वासे श्वासे नाम हबे रे बोल हरिबोल ।
(एक बार) गौर बला एइ हरिनाम बोल हरिबोल ॥

(एक बार) निताइ बला एइ हरिनाम बोल हरिबोल ।
(ओरे) गदाधरेर मुखेर बोल बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(ओरे) नामेर गुणे देखबि अभेद बोल हरिबोल ।
(नामे) आँधार हृदय हबे आलो बोल हरिबोल ॥
(नामे) आपद विपद दूरे याय रे बोल हरिबोल ।
(ओ तोर) सकल आशा पूर्ण हबे बोल हरिबोल ॥
(ओरे) शुष्क तरु मुञ्जरिबे बोल हरिबोल ।
(ओ मन) नीरस हृदय सरस हबे बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(हरि) नाम बिने आर नाइ रे गति बोल हरिबोल ।
(ताइ) नामे निये रतिमति बोल हरिबोल ॥
(ऐ नामे) मिलाय शुद्धा भक्ति बोल हरिबोल ।
(ऐ नाम) निते निते लागवे भालो बोल हरिबोल ।
(येइ) हरि बिकाय नामेर मूले बोल हरिबोल ।
(सेइ) हरिनाम रइलि भुले बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(ओरे) नाम ये रे तोर पथेर सम्बल बोल हरिबोल ।
(ओरे) बलार सुयोग थाकते हरि बोल हरिबोल ॥
(ओरे) ऐके ऐके दिन गैलो रे बोल हरिबोल ।
(ओ तुइ) मजबि यदि प्रेमरसे बोल हरिबोल ॥
(ओ तुइ) मजबि यदि नामरसे बोल हरिबोल ।
(तोर) मानव जनम सफल हबे बोल हरिबोल ॥

(ओरे) भुवन मंगल मधुर ए नाम बोल हरिबोल ।
(नामे) दिग् दिगन्त शुद्ध हबे बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

(ऐ) हरे कृष्ण हरे कृष्ण बोल हरिबोल ।
कृष्ण कृष्ण हरे हरे बोल हरिबोल ॥
(ऐ) हरे राम हरे राम बोल हरिबोल ।
राम राम हरे हरे बोल हरिबोल ॥
(तोरा) प्राण खुले बाहु तुले बोल हरिबोल ।
(तोरा) नेचे नेचे बाहु तुले बोल हरिबोल ॥
(यार) ये नामेते मजे मन सेइ तो हरिबोल ।
नामे प्रेमेर कोरो ना रे बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल ।

१४

जय मा भवानी, जय मा शिवानी
जय जगद्धात्री चण्डिके ।
ईशानी ईश्वरी जय महेश्वरी
महाविद्या जय अम्बिके ॥
तुमि मा शिवानी, तुमि मा भवानी
जगत-पालनी जगत-जननी ।
विश्व-विलासिनी, विश्व-विमोहिनी
विश्व-संहारिणी मा दुर्गे ॥

---

१. (१३) इस गाने की कुछ पंक्तियाँ माँ ने कहीं सुनी थीं। बाद में उसके साथ पद मिलाकर गाने पर हम लोगों ने भी उसमें कुछ योग दिया है।

मनोरमा मनमोहिनी कल्याणी करुणामयी ।
अभया अभयदायिनी रक्षा करो मा सङ्कटे ॥[1]

१५

जय मा भवानी जय मा शिवानी ब्रह्म सनातनी जय दुर्गा ।
जय दुर्गा जय दुर्गा जय दुर्गा जय दुर्गा ॥
कालविनाशिनी जय दुर्गा दुर्गतिनाशिनी जय दुर्गा ।
सत्य सनातनी जय दुर्गा ब्रह्म परात्परा जय दुर्गा ॥
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा जय दुर्गा .....

शक्ति-दायिनी जय दुर्गा भक्ति-दायिनी जय दुर्गा ॥
ज्ञान-दायिनी जय दुर्गा ब्रह्मविद्या-दायिनी जय दुर्गा ।
मुक्ति-दायिनी जय दुर्गा श्री दुर्गा जय दुर्गा ॥
दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा .....

भुवन-मोहिनी जय दुर्गा जगत् उद्धारिणी जय दुर्गा ।
प्राण-स्वरूपिणी जय दुर्गा ब्रह्म सनातनी जय दुर्गा ॥
महाभावमयी जय दुर्गा ज्ञानसत्तारूपिणी जय दुर्गा ।
दुर्गा दुर्गा जय दुर्गा दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा ।

आत्ममयी मा ब्रह्ममयी मा सत्यमयी मा ज्ञानमयी मा ।
प्रेममयी मा भक्तिमयी मा शक्तिमयी मा शान्तिमयी मा ।
सत्यमयी मा जय उमा आनन्द-प्रकाशिनी जय मा मा ॥

१. (१४) सोलन के महाराजा साहब देवी भागवत का अनुष्ठान करा रहे रहे थे। माँ अपने भाव में मिला-मिलाकर इन पदों को गा रही थीं।

१६

गुरु गोविन्द ब्रह्म नाम मा दुर्गा शिवराम ।
सीताराम जय सीताराम राधेश्याम जय राधेश्याम ॥
गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द । २
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ।
सीताराम सीताराम सीताराम प्राणाराम ॥
हा राम सीताराम सीताराम सीताराम ।
हा राम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ॥
राम राम राम राम राम राम राम राम ।
राजाराम राजाराम राजाराम (जय) राजाराम ॥
प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ।
जय राम जय जय राम जय राम जय जय राम ॥
जय राम सीताराम जय जय राम सीताराम ।
राम राम राम राम राम राम प्राणाराम ॥
जय सीताराम जय सीताराम जय सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम जय सीताराम .....[1]

१७

जय गङ्गाधर शिरोपर परिधाने बाघाम्बर ।
देव देव महादेव महादेव देव देव .....
हे नाथ विश्वनाथ विश्वनाथ विश्वनाथ ।
स्वयम्भू विश्वनाथ स्वयम्भू विश्वनाथ ।

१. (१६) १९५२ ई० में बम्बई में एक दिन माँ मिला-मिला कर इन पदों को गा रही थीं। उसीके अनुसार लिख लिया गया था।

विश्वेश्वर विश्वाथ हे नाथ विश्वनाथ।
हा नाथ विश्वनाथ हे नाथ विश्वनाथ·····

१८

हा राम हे राम सीताराम सीताराम।
हा राम हे राम रामराम रामराम॥
रामराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम।
जय राम श्रीराम रामराम रामराम॥
विश्वेश्वर विश्वनाथ गोपेश्वर गोपीनाथ।
रामराम सीताराम रामेश्वर प्राणाराम॥
विश्वरूप विश्वनाथ विश्वरूप ब्रजनाथ।
हे नाथ गोपीनाथ हे नाथ ब्रजनाथ॥
राधानाथ प्राणनाथ श्यामसुन्दर राधानाथ।
राधाकान्त राधानाथ हे नाथ दीननाथ॥
दीनबन्धु दीननाथ जगबन्धु जगन्नाथ।
हा कृष्ण हा नाथ हा कृष्ण हा नाथ॥
हा कृष्ण हा नाथ·····

१९

कालीतारा महाविद्या षोड़शी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
वगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दशमहाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्त्तिताः॥
दया करो दयामयी तुमि मागो विश्वमाता।
आमि ये मा दीन हीन तुमि ये गो जगत्त्राता॥

तुमि मागो जगद्धात्री महामाया मनोरमा।
सृष्टि-स्थिति-लयकर्त्री सत्य-स्वरूपिणी श्यामा॥
कृपा करो कृपामयी तुमि ये गो चित्स्वरूपा।[1]
चरणे प्रणमि जया विश्वविलासिनी उमा॥

■

१. (१९) इस गाने के प्रथम कुछ पदों के अतिरिक्त आगे के पदों को माँ ने अपने खयाल से कहा था।